Environmental Protection and Social Work Profession

(Proceeding With Full Paper)

Editors

Dr Bijendr Pradhan
Mr Ankit Sharma
Dr Pushpa Mishra
Dr Vikas Sharma

Environmental Protection and Social Work Profession
[Edited Book]

ISBN: 978-93-83634-45-3

© Editing Teem -2019

Editors: Dr. Bijendr Pradhan, Dr. Pushpa Mishra

Mr. Ankit Sharma, Dr. Vikas Sharma

Co-editors: Mr. Ranjit Kumar Jaiswal Mr. Indra Ram Poonia

First Edition: March, 2019

Price: 350/-

Published by: Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute,
Ladnun-341306 (Rajasthan)

Printed by:

No part of this book may be reproduced or transmitted any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers.

Cover Page Photo Credits:
https://www.instagram.com/p/BtTV1koHYVX/?utm_source=ig_share_sheet&igshid=1svv9176cp9a

वैदिक साहित्य में पर्यावरण

डॉ. अशोक भास्कर

सहायक आचार्य, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

भारतीय संस्कृति का मूल वेद है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की विविध संहिताओं के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा कल्प सूत्र को भी वैदिक साहित्य के अन्तर्गत माना जाता है। वेद अनन्त ज्ञान–राशि का वह अक्षय भण्डार है जो हमारे पूर्वज ऋषियों के द्वारा परिलक्षित एवं आविष्कृत होकर विविध मन्त्रों और विधानों के संग्रह रूप से प्रकट हुआ।

पं. बलदेव उपाध्याय ने वेद की बहुत उचित परिभाषा की है–"अपने प्रातिभ चक्षु के सहारे साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों के द्वारा अनुभूत अध्यात्मशास्त्र के तत्वों की विशाल विमल ज्ञानराशि का ही नाम 'वेद' है।" वैदिक साहित्य ऐसा भण्डार है, जो आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी श्रवण परम्परा के अन्तर्गत सुनकर कण्ठस्थ किये जाने से सुरक्षित है।

वेद का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान। वेद शब्द ज्ञानार्थक 'विद्' धातु से 'घञ्' प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न होता है। इसका निर्वचनजन्य अर्थ होता है– ज्ञानराशि। इस ज्ञान को श्रुति कहा जाता है। इस प्रकार सामान्य अर्थ के रूप में वेद शब्द पवित्र ज्ञान के रूप में अपना सीमित उपादान रखता है। यह पवित्र और धार्मिक ज्ञान अपनी सर्वोच्च सत्ता में प्रतिष्ठित है।

वैदिक संस्कृति ने मानव के सर्वतोमुखी विकासार्थ एवं कल्याणार्थ एक ऐसी जीवन–पद्धति विकसित की जो विज्ञान के नियमों के अनुकूल एवं प्रकृति की आवश्यकताओं के अनुरूप थी। वैदिक जीवन पद्धति का आदर्श वाक्य था, "सर्वेप्राचीन आर्यों की जीवन–पद्धति आश्रमों में व्यवस्थित थी। इन आश्रमों में ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति प्रकृति की शरण में रहकर उसी का संरक्षण एवं अभिवर्द्धन करता हुआ उसी में अपना जीवन–यापन करता था, जबकि गृहस्थाश्रम पर शेष तीन आश्रमों की सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व था। इस प्रकार आश्रम व्यवस्था में भी पर्यावरण व्यवस्था ही प्रतिष्ठित थी। समग्र प्रकृति एवं मनुष्य के पारस्परिक संबंधों की मधुरता या आनुपातिक संतुलन का नाम ही पर्यावरण संरक्षण है। पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न आधार एवं साधनों में धार्मिक भावना भी एक आधार है जो प्राचीन अवधारणा का केन्द्र बिन्दु है। इस दृष्टि से प्राचीन वैदिक साहित्य मुख्यतः पर्यावरण साहित्य के रूप में परिलक्षित होता है। "ज्ञान कर्म एवं उपासना की त्रिवेणी से आप्लावित वैदिक साहित्य में कर्म (यज्ञ, यज्ञादि) का सीधा संबंध भैषज्य एवं पर्यावरण शुद्धि से है तो उपासना विशुद्ध रूप से प्राकृतिक उपादान से संबंधित है।"[1] अग्नि, मरुत्, वरुण, सोम, सविता, पृथ्वी इत्यादि सभी प्राकृतिक उपादान वैदिकों के पूजनीय रहे हैं। वस्तुतः जो प्राकृतिक तत्त्व मानव के लिए कल्याणकारी और उपयोगी थे, वैदिक ऋषि ने उनमें देवत्व की भावना समाहित की। वेदों में इन्हीं दिव्य प्राकृतिक शक्तियों की प्रसन्नता और इनसे अपने कल्याण एवं सुख–समृद्धि की प्राप्ति के लिए स्तुतियों का विधान किया गया है। ये स्तुतियाँ प्रकृति के प्रति श्रद्धा–संवलित हृदय की कृतज्ञ अभिव्यक्तियाँ थी। यद्यपि उस समय पर्यावण प्रदूषण जैसी कोई समस्या नहीं थी तथापि इस संबंध में प्राचीन ऋषियों का चिंतन अत्यन्त व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक रहा है। पर्यावरण के संदर्भ में प्राचीन ऋषि की पवित्र भावनाएँ प्रबल रही थी।

प्राचीनकाल में गांव और नगर यथासम्भव किसी बड़े जलाशय, या नदीके किनारे बनाए जाते थे। विद्यापीठ और आश्रम तो प्रायः नदियों या सरोवरों के किनारे ही होते थे। स्नान, प्रक्षालन, तथा यज्ञादि कार्यों में उपयोग तथापीने के लिए शुद्ध जल उपलब्ध हो सके, इसके लिए प्रदूषण की बाधा से रहित घाट निर्मित किए जाते थे, जो तीर्थ कहलाते थे। धीरे–धीरे ये तीर्थ विद्यापीठों के वाचक बन गए। आज के तीर्थ वस्तुतः उन यज्ञपीठों और विद्यापीठों के स्मारक हैं। इसीलिए प्राचीन काल में जब कोई ऋषि विद्यार्थीनगर में आता था तो राजा उससे जल की शुद्धता के विषय में पूछता था और शुद्ध जल मिल सके इसकी व्यवस्था करता था।

वैदिक काल पर्यावरण का स्वर्णिम काल था। समस्त चराचर प्रकृति विशद और प्रसन्न थी। शीतल–मन्द–सुगन्ध वायु प्राणों का संचार करती थी। निर्मल जल पवित्र नदियों और जलाशयों में अवगाहन करने वालों के शरीरों को ही मात्र स्वच्छ नहीं करते थे अपितु अन्तःकरण की विशुद्धि में भी सहायक थे।